Article Date	Headline / Summary	Publication
16 Jul 2026	Kharif crop sowing in the state is trailing by 17.83 lakh hectares so far	Dainik Bhaskar (Hindi)

अल नीनो का असर • तिल, ग्वार और मोठ की बुआई सबसे ज्यादा प्रभावित, प्रदेश में तय लक्ष्य की 63% हो सकी बुआई

प्रदेश में अब तक खरीफ फसलों की बुआई 17.83 लाख हेक्टेयर कम

जयपुर | अल नीनो के चलते मानसूनी बारिश कम होने से मौजूदा खरीफ सीजन के दौरान राजस्थान में अब तक 104.12 लाख हेक्टेयर में फसलों ही बुआई हो सकी है, जो पिछले वर्ष की समान अवधि के मुकाबले 17.83 लाख हेक्टेयर कम है। पिछले साल 13 जुलाई तक प्रदेश में 121.95 लाख हेक्टेयर बुआई की गई थी। कृषि विभाग के अनुसार इस साल राज्य में खरीफ फसलों की बुआई का लक्ष्य 165.39 लाख हेक्टेयर रखा गया है, जो पिछले वर्ष के 158.01 लाख हेक्टेयर की तुलना में 7.38 लाख हेक्टेयर ज्यादा है। लेकिन बारिश कम होने से अब तक लक्ष्य की 63 फीसदी ही बुआई हो सकी है। सबसे ज्यादा असर तिल, ग्वार और मोठ जैसी फसलों पर पड़ा। तिल की बुवाई लक्ष्य की केवल 26 फीसदी, ग्वार की 44 और मोठ की 46 फीसदी हो सकी है। इसके विपरीत, मूंगफली की 85, मक्का की 83 और चौला की 82 फीसदी बुआई की जा चुकी है।

13 जुलाई तक प्रमुख फसलों की बुआई

फसल	2025	2026	अंतर
धान	197.20	175.82	-21.38
बाजरा	3747.57	2743.08	-1004.49
मक्का	883.21	805.29	-77.92
मूंग	1788.13	1692.74	-95.39
मोठ	661.57	461.31	-200.26
मूंगफली	805.43	980.74	+175.31
सोयाबीन	902.65	806.31	-96.34
कपास	613.57	523.34	-90.23
ग्वार	1335.96	1110.24	-225.72
तिल	122.06	64.96	-57.10

मद	लक्ष्य	बुवाई	लक्ष्य हासिल
खरीफ क्षेत्र	165.39	104.12	63%
खाद्यान्न	100.94	66.41	66%
तिलहन	27.50	18.64	68%
अन्य फसलें	36.95	19.07	52%

पैदावार घटी तो खाद्य तेल और दालें महंगी होने की आशंका

खाद्य तेल विशेषज्ञ डॉ. मनोज मोरारका के मुताबिक, जुलाई के पहले पखवाड़े तक पर्याप्त बारिश नहीं होने से बुआई में देरी हो रही है। यदि आगामी दिनों में सामान्य वर्षा नहीं होती तो बाजरा, ग्वार, तिल और दालों की उत्पादकता प्रभावित होने की आशंका है। तिलहन की फसल कमजोर रहने पर खाद्य तेल की कीमत बढ़ सकती है। यदि जुलाई के दूसरे पखवाड़े और अगस्त में अच्छी बारिश हो जाती है तो स्थिति में सुधार संभव है। कमोडिटी विशेषज्ञ अनूप कुमार खंडेलवाल का कहना है कि देर से बुआई होने पर फसल की वृद्धि अवधि घटती है। इससे प्रति हेक्टेयर उत्पादन कम होने और किसानों की आय पर असर पड़ने की आशंका बढ़ जाती है। कृषि उत्पादन प्रभावित होता है तो इसका असर आम उपभोक्ता की रसोई तक पहुंचेगा। जिंसों के दाम बढ़ने की आशंका रहेगी। ग्वार और बाजरे की कम पैदावार का असर डेयरी क्षेत्र पर भी पड़ सकता है।

ऐसे किसानों को मिल सकती है राहत

बजाज जनरल इंश्योरेंस के एमडी डॉ. तपन सिंघल का कहना है कि अल नीनो के कारण कम या अनियमित बारिश से बुआई, पैदावार और किसानों की आय प्रभावित होती है। ऐसे में पैरामेट्रिक इंश्योरेंस किसानों का सुरक्षा कवच बन सकता है। इसके तहत सूखा, अत्यधिक बारिश या अन्य मौसमी जोखिम से होने वाले आर्थिक नुकसान की भरपाई में मदद मिलती है। फसल के वास्तविक नुकसान का आकलन करने के बजाय बारिश, तापमान या सूखे जैसे तय मौसमी मानकों के आधार पर क्लेम का भुगतान किया जाता है। किसानों को राहत राशि जल्दी मिल सकती है। इससे अगली फसल के लिए नकदी उपलब्ध हो जाती है। बदलते मौसम के दौर में बीमा किसानों की आय को सुरक्षित रखने और प्राकृतिक जोखिम से आर्थिक सुरक्षा पाने का प्रभावी उपाय बन रहा है।